

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते ।
 उपसर्ग परीषह-कृत बाधा, जो साम्य-भाव से सहते ।
 जो शुद्ध-अतीन्द्रिय आनन्द-रस का, लेते स्वाद घनेरा ॥२॥
 जो दर्शन-ज्ञान-चरित्र-वीर्य-तप, आचारों के धारी ।
 जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज चैतन्य विहारी ॥
 शाश्वत सुख दर्शन-ज्ञान-चरण में, करते सदा बसेरा ॥३॥
 नित समता स्तुति वन्दन अरु, स्वाध्याय सदा जो करते ।
 प्रतिक्रमण और प्रति-आख्यान कर, सब पापों को हरते ॥
 चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ, जिनमें करें बसेरा ॥४॥

(१४)

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में, रे अकेले वन में, मधुवन में ।
 मधुवन में आज मची रे होली, मधुवन में ॥टेक॥
 चैतन्य-गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते ।
 एक ही ध्यान रमायो वन में, मधुवन में ॥होली. ॥१॥
 ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई ।
 विभाव का ईधन जलायें वन में, मधुवन में ॥होली. ॥२॥
 अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा ।
 पतली धार न भाई मन में, मधुवन में ॥होली. ॥३॥
 हमें तो पूर्ण दशा ही चाहिये, सादि-अनंत का आनंद लहिये ।
 निर्मल भावना भाई वन में, मधुवन में ॥होली. ॥४॥
 पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती ।
 श्रेणी माँडी पलक छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥५॥
 नेमिनाथ गिरनार पे देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो ।
 केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥६॥
 बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते ।
 भव से पार लगाये वन में, मधुवन में ॥होली. ॥७॥
